Shodhbodhalaya: An International Peer reviewed
Multidisciplinary Journal
Volume 4 | Issue 1 | ISSN: 2584-1807 | (https://shodhbodh.com/)

अनूपपुर जिले में स्थित सिलहरा की गुफायें–एक दर्शनीय पर्यटन स्थल

शोध–निर्देशक
डॉ. बी.पी. सिंह
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (भूगोल विभाग)
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह (स्वशासी)
महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

शोधार्थी
प्रतिभा पाण्डेय
शोध छात्रा

परिचय–

अनूपपुर जिला म0प्र0 राज्य का एक आदिवासी मिला है। अनूपपुर जिले का गठन वर्ष 2003 में किया गया था। इसके पूर्व यह जिला शहडोल जिले की एक तहसील के रूप में स्थापित था। शहडोल जिले को विभाजित कर जिले की तत्कालीन 04 तहसीलों क्रमांक अनूपपुर, कोतमा, पुष्पराजगढ़ एवं जैतहरी की विभक्त कर नया जिला अनूपपुर का गठन किया गया था। अनूपपुर जिले की कुल जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 749237 थी। यहां की कुल जनसंख्या 358543 वर्ष 2011 की जनगणना में पायी गई थी। जिले में साक्षरता दर 67.88% थी। यहां पुरूष साक्षरता 78.26% एवं महिला साक्षरता 57.30% थी। जिले में लिंगानुपात 976 पाया गया है, जो 2001 में 961 का जो राष्ट्रीय स्तर 940 की तुलना में अधिक है। जिले में 91.63% हिन्दू, 2.87% मुस्लिम, 0.28% ईसाई एवं शेष अन्य धर्मो को मानने वाले लोग है।

भौगोलिक स्थिति–

अनूपपुर जिला म0प्र0 राज्य के पूर्वी भाग में स्थित है। जिले के उत्तर में शहडोल जिला पश्चिम में उमरिया व डिंडोरी जिला तथा दक्षिण में डिंडोरी जिला स्थित है। जिले की पूर्वी सीमा छत्तीसगढ़ राज्य को स्पर्स करती है। अनूपपुर जिले की भौगोलिक स्थिति $82^0.10'$ उत्तरी अक्षांश से $23^0.36'$ उत्तरी अक्षांश एवं $81^0.40'$ पूर्वी देशांतर से $82^0.10'$ पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 3746.71 वर्ग किमी. है। जिले में 602 गाँव एवं 282 ग्राम पंचायत है।

अनूपपुर जिले से 40 किमी. की दूरी पर कोतमा तहसील के अंतर्गत शिवतहरा गाँव गुफाओं के लिए प्रसिद्ध है। यहां की गुफाओं को सिलहरा की गुफायें कहा जाता है। यह गुफायें दारसागर ग्राम पंचायत में केवई नदी की जल धाराओं के निकट शिलहरा पहाड़ियों को काटकर बनाई गई। यह गुफायें सम्पूर्ण क्षेत्र में

अपनी अप्रतिम सुन्दरता एवं कलाकारी के लिये प्रसिद्ध है। बड़ी संख्या में अमरकंटक आने वाले पर्यटक यहां का अनंद लेने आते है।

अध्ययन का उद्देश्य–

प्रस्तुत शोध का प्रमुख उद्देश्य गुमसुदी के अंधेरे में पड़े अप्रतिम सौन्दर्य से परिपूर्ण गुफाओं को आकर्षक सौन्दर्य को प्रस्तुत करना है। सिलहरा की गुफाओं का इतिहास व इनके विशेषताओं को प्रकाश में लाना तथा इस क्षेत्र को पर्यटन मानचित्र पर स्थान दिलाना अध्ययन का उद्देश्य है। साथ ही पर्यटन विकास की समस्याओं की पहचानकर भावी विकास की रणनीति तय करना भी अध्ययन का उद्देश्य है।

अध्ययन की परिकल्पना–

सिहलरा की गुफायें सुरम्य वातावरण के बीच दुर्लभ कलाकृति को प्रस्तुत करती है। यहां का सौन्दर्य पर्यटकों को लुभाने वाला है। किंतु पर्यटन हेतु आधारभूत सुविधाओं के विकास के बिना पर्यटकों का आगमन पर्याप्त संख्या में नहीं हो पा रहा है।

सिलहरा की गुफाओं का आकर्षण–

अनूपपुर जिला में स्थित अमरकंटन स्थल पर्यटन के क्षेत्र में जाना माना स्थान है। यहां बड़ी संख्या में घरेलू पर्यटन आते है। विदेशी पर्यटक भी यहां देखने को मिलते है, जिनकी संख्या क्रमशः बढ़ रही है। यहां आने वाले बहुसंख्यक पर्यटकों को केवल यहां की प्राकृतिक सुंदरता एवं पवित्र सोन, नर्मदा निदयों का उद्गम स्थल संत मुनियों की तापो भूमि के ही बारे में जानकारी है। बहुत कम लोगों यहां की ऐतिहासिक पर्यटन एवं सिलहरा की गुफाओं के बारे में जानकारी नहीं है।

अनूपपुर जिले में स्थित सिलहरा की गुफायें यहां से लगभग 40 किमी. की दूरी पर कोतमा तहसील में शिवलहरा की गुफाएं स्थित है, जिन्हें स्थानीय लोग सिलहरा की गुफाओं के नाम से जानते है। भालू माड़ा से 10.00 किमी. दूर शिवलहरा गाँव से 2 किमी. कच्चे रास्ते से चलने के बाद यहां पहुंचा जा सकता है। अनूपपुर जिले के दारसागर ग्राम पंचायत में केकई नदी की जलधाराओं के किनारे शिवलहारा की पहाड़ियाँ विस्तृत है। इन पहाड़ियों के बीच शिवलहरा की गुफायें स्थित है। ऐसा ज्ञात होता है कि इन गुफाओं की रचना दूसरी शताब्दी में हुआ है। लाल बलुआ पत्थरों से निर्मित गुफाओं के आगे–पीछे सीढ़ियां सुरम्य कुंड़, प्राचीन स्थनागार, पूजा स्थल और पढ़ने लिखने की पट्टिकायें मिलते है। गुफाओं में खूब सूरत पाषाण चक्र रखा है, जो संरक्षण के आभाव मे क्षरित हो रहा है। यहा की गुफाओं के अन्दर मिट्टी के पात्र भी रखे है।

गुफा के अंदर भगवान शिव का पूजा स्थल एवं श्रद्धालुओं को बैठने के लिय बरामदा भी बना है, ऐसा माना जाता है कि ये गुफायें दूसरी शताब्दी के नागवंशी, शासकों द्वारा बनवाई गई है।

गुफा की दीवार पर प्राचीन लिपि में कुछ शब्द उकेरे गये है, जिन्हें शायद अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है। यहाँ के बुजुर्गो से ज्ञात हुआ कि यह गुफायें पाँडव कालीन गुफायें है। उनकी जानकारी के अनुसार पाँडव अपने वनवास के समय इन गुफाओं में ठहरे थे। गुफाओं के पास ही केवई नदी का निर्मल जल कल–कल की अविरल ध्वनि के साथ प्रावाहित होता है जो यहां पर बहुत सकून देने वाला है। पर्यटक यहां आकर घंटों बैठकर आनन्द का अनुभव लेते है। नदी जल साफ व स्वच्छ है, जिसमें कुछ लोग स्नान भी करते है तथा भोजन कर आराम करते है।

पर्यटकों का आगमन–

सिलहरा की गुफाओं के आकर्षण को देखने के लिये कुछ घरेलू पर्यटक आते है। घरेलू पर्यटकों में अधिक संख्या स्थानीय लोगों की है। अमरकंटक आने वाले पर्यटक अपने स्वयं के वाहनों या टूरिस्ट आपरेटर के माध्यम से भी यदा–कदा आते जाते है। ग्राम पंचायत से जानकारी लेने पर ज्ञात हुआ कि यहां कुछ त्योहारों में 100 से 200 लोग तक आते है। वर्ष भर में यहां आने वाले पयटकों की संख्या 2000 से 2500 बताई गई। पर्यटकों का कम आने का कारण यहां पर पर्यटकीय आधारभूत सुविधाओं एवं आवागमन की सुविधाओं का आभाव पाया गया है।

सिलहरा में पर्यटन विकास की समस्यायें–

सिलहरा की गुफायें सौन्दर्य से परिपूर्ण एवं पर्यटकां को आकर्षित करने की क्षमता के से युक्त होते हुए भी पर्यटकों की अपनी ओर आकर्षित नहीं कर पा रही है। उसके लिय सर्वप्रथम कारा गुफाओं के संरक्षण एवं परिसर सौन्दर्य की कमी पाई गई है। साथ ही इन गुफाओं का प्रचार–प्रसार कम होना भी पर्यटन विकास में बाधक हैं यहां की गुफाओं तक पहुंच मार्ग पक्का न होना भी पर्यटकों को यहां जाने के लिये हसोत्साहित करता है। अध्ययन के दौरान पाया गया है कि पर्यटन विकास के लिये आवश्यक बुनियादी सुविधाओं का विकास न होना पर्यटन विकास में सबसे बड़ी बाधा है।

निष्कर्ष एवं सुझाव–

अनूपपुर जिला में स्थित शिवलहरा की गुफायें पर्यटकों को मंत्र मुग्ध करने वाली है। इस पर्यटन स्थल में पक्की व चौड़ी सड़कों का निर्माण, प्रकाश की व्यवस्था, सुरक्षा की व्यवस्था, खान–पान की सुविधायें,

मनोरंजन आवास एवं आराम की सुविधा, आवश्यक वस्तुओं की पूर्ति आदि पर्यटक सुविधाओं का विस्तार कर पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकता है। आवश्यकता यह है कि इस केन्द्र का प्रचार–प्रसार अमरकंटक पर्यटक स्थल, अनूपपुर जिला मुख्यालय एवं जिले के पर्यटन मानचित्र पर इसको प्रदर्शित किया जाय तो निश्चित ही पर्यटकों का आगमन बढ़ेगा।

शिवलहरा की गुफाओं में पर्यटन विकास का सबसे अधिक फायदा यहां के ग्राम वासियों स्थानीय लोगों, स्थानीय प्रशासन को होगा। स्थानीय प्रशासन को जहां बड़ी मात्रा में पर्यटकों से रेवन्यू प्राप्त होगी, वहीं स्थानीय लोगों को अपने उत्पादों के लिय बाजार मिलेगा। सब्जी, फल–फूल को लोग बेचकर रोजगार प्राप्त करेंगे वही कालाकार अपनी कला का प्रदर्शन कर रोजगार प्राप्त करेगा। कुंभकर, बंसकार, लोहार, बढ़ई, नाई, दोना–पत्तल बनाने वाला बारी आदि सभी अपने उत्पादों को बेचकर प्रत्यक्ष रूप से लाभ प्राप्त करेंगे। स्थानीय लोग अपने घरों के कमरों को किराये में उठाकर लाभ प्राप्त करेंगे। सभी लोगों को रोजगार प्राप्त होने पर क्रय शक्ति बढ़ेगी, और बाजार तथा क्षेत्र का विकास स्वयमेव आदि होगा।

निष्कर्ष रूप से कह सकते है कि सिलहारा गाँव में पर्यटन विकास से चहुमुखी विकास की संभावनाये है। अतः सिलहारा जैसे पर्यटन आकर्षण क्षेत्रों में पर्यटन विकास से पिछड़े क्षेत्रों का सर्वाङ्गीण विकास संभावित है।

संदर्भ–

1. सिंह आशा रानी (2002) बघेलखण्ड में पर्यटन विकास एवं पर्यटन का परिवर्तित स्वरूप अप्रकाशित शोध प्रबंध, अ0प्र0 सिंह विश्व विद्यालय रीवा।
2. सिंह बी0बी0 (2010–11) मध्यप्रदेश में पर्यटन की समस्याएं एवं संभावनाएं, परियोजना प्रतिवेदन, यू0जी0सी0 मध्य क्षेत्रीय कार्या0 भोपाल।
3. शुक्ला, अरूणेश (2022) म0प्र0 पर्यटन उद्योग का आर्थिक विकास पर प्रभाव एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (Internal any journal of education modern arrangement and social science research journal sept-2022 (PP. 164-166)